

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, यशायाह, सत्र 12, ईसा। 24-25

© जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं। यह सत्र संख्या 12, यशायाह अध्याय 24 और 25 है। शुभ संध्या।

आपमें से प्रत्येक को देखकर अच्छा लगा। मैंने आज सारा मैक्लीन को एक ईमेल अनुस्मारक भेजने के लिए कहने के बारे में बहस की, लेकिन जाहिर है, आप सभी ने खुद को याद दिलाया, इसलिए यह अद्भुत है। धन्यवाद।

आइए प्रार्थना से शुरुआत करें। हे भगवान, हम अपने आप को आपकी सच्चाई को हमारे दिलों में प्रेरित करने के लिए आपकी आत्मा की तीव्र आवश्यकता की याद दिलाते हैं। धन्यवाद कि हमें ऐसा करने के लिए आपसे विनती करने की ज़रूरत नहीं है।

धन्यवाद कि आप ऐसा करना चाहते हैं और यदि हम आपके लिए साफ हाथ और शुद्ध दिल लाएंगे, तो आप वास्तव में अपनी वास्तविकता की गहराई को हमारे सामने प्रकट कर देंगे। और हे भगवान, हमें इसी की ज़रूरत है, अवास्तविकता, झूठ, छवि, अनुमान की इस दुनिया में, हमें आपकी वास्तविकता की कितनी सख्त ज़रूरत है। और इसलिए हम प्रार्थना करते हैं कि आप आज शाम फिर आएँ और हमें अपनी बात बताएं। धन्यवाद। आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद। आपकी भलाई के लिए धन्यवाद।

हमारे बीच आपकी उपस्थिति के लिए धन्यवाद। आपके नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

मैं आपके दयालु क्रिसमस उपहारों के लिए आपको धन्यवाद व्यक्त करना चाहता हूँ। आपने जो संग्रह उठाया उसके लिए धन्यवाद। आपमें से कई लोगों ने गुमनाम रूप से और अन्यथा उपहार दिए। धन्यवाद। आपका बहुत - बहुत धन्यवाद। मैं वास्तव में इसकी सराहना करता हूँ और मैं आपकी उपस्थिति के लिए, और मुझे सप्ताह दर सप्ताह यहां आने देने के लिए बहुत आभारी हूँ। इसलिए आपका धन्यवाद। अगर मुझे यह काम खाली कमरे में करना पड़े तो यह और भी मुश्किल होगा। इसलिए आपका धन्यवाद। धन्यवाद।

यदि आप पहली बार हमारे साथ आए हैं, तो बाहर टेबल पर शीट पर अध्ययन मार्गदर्शिकाएँ हैं। आज रात के लिए एक या दो हो सकते हैं, मुझे नहीं पता, और फिर वे अगले सप्ताह के लिए वहां होंगे। और मैं उन लोगों से बहुत प्रभावित हूँ जो अपना होमवर्क करते हैं।

इसलिए आपका धन्यवाद। हम यशायाह की किताब देख रहे हैं। हमने अध्याय 1 से 6 में समस्या और समाधान देखा है।

सवाल यह है कि क्या यह इज़राइल सुपाठ्य कैसे हो सकता है? ठीक है, यह इज़राइल, पापी, भ्रष्ट, मानवीय महानता से आसक्त, यह इज़राइल कैसे बन सकता है? वह इज़राइल जो शुद्ध है, जो स्वच्छ है, वह राष्ट्रों के लिए ईश्वर का दूत है। और इसका उत्तर यह है कि क्या जो अनुभव

अशुद्ध होंठ वाले व्यक्ति को हुआ वही अनुभव अशुद्ध होंठ वाले व्यक्ति को भी हो सकता है। तो, हमारे पास सेवकत्व का आह्वान है।

अध्याय 7 से 39 में, हम विश्वास, दासता के आधार, को देख रहे हैं। हम अपनी दुनिया को नियंत्रित करने और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपना आत्म-सुरक्षात्मक प्रयास कभी नहीं छोड़ेंगे जब तक कि हम वास्तव में भगवान पर भरोसा करने की स्थिति में नहीं आ जाते। इसके बारे में बात करना आसान है, करना मुश्किल है, वास्तव में अपने भाग्य को सौंपने का जोखिम उठाना, लेकिन उससे भी अधिक, अपने आप को भगवान के हाथों में सौंपना।

और इसलिए, ये अध्याय उस मुद्दे से निपट रहे हैं। कई मायनों में, जैसा कि मैंने कहा था जब हम अध्याय 6 को देख रहे थे, किताब का बाकी हिस्सा एक तरह से अध्याय 6 के आकार पर बनाया गया है। और इसलिए, कई मायनों में, यह भगवान का एक दर्शन है, उनकी महानता का एक दर्शन है, उसकी पवित्रता का एक दर्शन, उसकी भरोसेमंदता का एक दर्शन। जिस प्रकार यशायाह के पास वह दृष्टि थी, उसी प्रकार इन अध्यायों में वास्तविक अर्थों में लोग उस दृष्टि का अनुभव कर रहे हैं।

हमने तब देखा, या हमने देखा है, कैसे अध्याय 7 से 12 में राजा आहाज को परमेश्वर पर भरोसा करने का अवसर दिया गया और उसने इनकार कर दिया। वह ईश्वर पर भरोसा करने से पहले अपने सबसे बड़े दुश्मन, अशूर पर भरोसा करना पसंद करेगा। और इससे पहले कि हम उस पर बहुत पथर फेंकें, हमें खुद पर एक नज़र डालने की ज़रूरत है।

भगवान के बजाय पैसे पर भरोसा करना कितना आसान है। भगवान के बजाय पद पर भरोसा करना कितना आसान है। और आगे और आगे, और उनमें से कोई भी हमारा मित्र नहीं है।

मैं उस भजन के बारे में सोचता हूँ जो कहता है, क्या यह घृणित संसार हमें ईश्वर तक ले जाने वाला मित्र है? नहीं, उत्तर नहीं है। लेकिन किसी भी कीमत पर, वह मना कर देता है। और इसलिए, उन अध्यायों में, हम पूरी तस्वीर देखते हैं।

यदि आप भरोसा करने से इंकार कर देंगे तो क्या होगा? असीरिया आने वाला है। लेकिन क्या भगवान आपको वहां छोड़ देंगे? नहीं, अपनी कृपा से, ईश्वर अपने मसीहा को भेजने जा रहा है।

और यदि आप वास्तव में अध्याय 9 और 10 में भगवान के चरित्र को पकड़ लेंगे, और उस आधार पर अपने जीवन को व्यवस्थित करेंगे, तो भगवान आपके अनुशासक का न्याय करेंगे। अशूर का न्याय किया जाएगा और मसीहा प्रकट किया जाएगा। ताकि हम भरोसा न करने के निहितार्थों की पूरी तस्वीर देख सकें, अध्याय 12 तक हमारे पास वे सुंदर शब्द हैं, आप उस दिन कहेंगे, मैं आपको धन्यवाद दूंगा, हे भगवान, क्योंकि यद्यपि तू मुझ पर क्रोधित था, तौभी तेरा क्रोध शान्त हो गया, कि मुझे शान्ति दे।

देख, परमेश्वर मेरा उद्धार है। मैं भरोसा करूंगा और डरूंगा नहीं। लेकिन चूँकि A परीक्षा में असफल हो गया है, हम कक्षा में वापस चले जाते हैं।

और इसलिए, अध्याय 11 से 13 में, हमारे पास विश्वास का पाठ है। आपको मानवता पर भरोसा क्यों नहीं करना चाहिए जैसा कि राष्ट्रों में देखा जाता है? और हमने अभी-अभी उस अनुभाग का अपना अध्ययन समाप्त किया है। राष्ट्रों पर भरोसा मत करो।

अब मैं आपसे पूछता हूँ, यह थोड़ा खतरनाक है, लेकिन मैं आपसे पूछता हूँ, हमें राष्ट्रों पर भरोसा क्यों नहीं करना चाहिए? वे असफल हो जायेंगे। और क्या? अंततः वे स्वयं ईश्वर की आराधना करना सीख जायेंगे। ठीक है, वे सभी यहूदा के परमेश्वर के न्याय के अधीन हैं और उनमें से कई एक दिन यहूदा के परमेश्वर की पूजा करेंगे।

तो आखिर आप उन पर भरोसा क्यों करेंगे? हालाँकि, उन अध्यायों, 13 से 23 तक को देखते हुए, यह धारणा प्राप्त करना संभव होगा कि राष्ट्र इतिहास के मंच पर वास्तविक अभिनेता हैं। और वह ईश्वर, यहोवा, मैं हूँ, एक प्रकार का रिएक्टर है। वे अपना मन बना लेते हैं कि क्या करना है और भगवान कहते हैं, हम्म, अब देखते हैं, मुझे आश्चर्य है कि मुझे इसके बारे में क्या करना चाहिए।

जिस खंड को हम आज रात देखना शुरू कर रहे हैं, अध्याय 24 से 27, कहता है, अरे नहीं, नहीं, नहीं। इतिहास के मंच पर भगवान महान अभिनेता हैं। ईश्वर वह है जो इतिहास का शासक है।

ईश्वर ही वह है जो निर्णय ले रहा है। वह केवल उस पर प्रतिक्रिया नहीं कर रहा है जो मनुष्य करने का निर्णय लेता है। और यहाँ निस्संदेह हमारे पास दैवीय संप्रभुता और मानवीय स्वतंत्रता की यह अचूक पहेली है।

एक ऐसी पहेली जिसका उत्तर मानव बुद्धि के लिए नहीं है। इसका उत्तर देने का हर प्रयास किसी न किसी खाई में गिर जाता है। यदि आप कहते हैं, ठीक है, संप्रभुता, बस, तो आप मुसलमानों की तरह नियतिवाद की खाई में गिर जायेंगे।

यहोवा सब कुछ घटित कराता है, जिसमें आपको सही जगह पर एक पेंसिल ढूँढना और उसे उठाने के लिए तैयार रहना और अपना नाम लिखते समय अपनी बांह की हर हरकत के लिए तैयार रहना शामिल है। यह ईश्वरीय संप्रभुता है, बेहतर होगा कि आप इस पर विश्वास करें। या, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, यह गलत है, यह मानवीय स्वतंत्रता है, हाँ।

और भगवान कहते बैठे हैं, हे प्रिय, मुझे आश्चर्य है कि वे आगे क्या करने जा रहे हैं। हे भगवान, ओह उसे देखो, हे भगवान, दयालु। लेकिन उन दोनों के बीच कहीं न कहीं यह वास्तविकता है कि ईश्वर के हाथ और स्पर्श के अलावा कुछ भी नहीं होता है, बल्कि जो कुछ भी होता है वह ईश्वर की अभिव्यक्ति है जो हमें चुनने की स्वतंत्रता देता है।

तो, इन अध्यायों में, वह चित्र विकसित किया गया है। आज रात, हम 24 और 25 पर विचार कर रहे हैं। अगले सप्ताह हम 26 से 27 पर विचार करेंगे और फिर, यही हमारा पैटर्न है।

हम मोटे तौर पर एक रात में दो अध्याय कर रहे हैं। और मेरे अंदर और बाहर गिरने के दौरान आपके धैर्य के लिए धन्यवाद। जहाँ तक मैं इस समय जानता हूँ, हम अब से लेकर जून के मध्य तक दो अपवादों के साथ प्रत्येक सोमवार की रात होंगे।

तो, आप उस पर निर्भर हो सकते हैं। ठीक है, अध्याय 24। अब हमने अलग-अलग राष्ट्रों के बारे में बात की है।

बेबीलोन, मोआब, मिस्र, दमिश्क और इज़राइल। बेबीलोन, फिर से। अरब, स्वयं यहूदा, और संपूर्ण व्यक्तिगत राष्ट्र।

अब जब हम अध्याय 24 को देखते हैं, तो यह उन सभी का एक सामान्य सारांश है। और कभी-कभी छात्र मुझसे बहस करेंगे कि, नहीं, हमें 13 से 23 नहीं कहना चाहिए। हमें इन सबके निष्कर्ष के रूप में 24 के साथ 13 से 24 कहना चाहिए।

और आप इसके लिए एक अच्छा तर्क दे सकते हैं। लेकिन यह उन मामलों में से एक है जिसके बारे में मैंने आपसे पहले बात की है जहां यह कठिन है। खैर, शायद इसे दूसरे तरीके से कहें।

यशायाह संक्रमणकालीन खंड बनाने में बहुत प्रतिभाशाली है जो पीछे की ओर देखने के साथ-साथ आगे की ओर भी देखता है। और हम देखेंगे, 24 और 25, 26 और 27 के बीच कई संबंध हैं जो अधिकांश लोगों को, उदार या इतने उदार नहीं, यह विश्वास दिलाते हैं कि विभाजन बिंदु 23 और 24 के बीच है। ठीक है, श्लोक 1 और 3 में, अभिनेता कौन है? यहोवा, प्रभु, हाँ।

यहोवा पृथ्वी को खाली कर देगा और उसे उजाड़ देगा। प्रभु ने यह वचन कहा है। इसलिए, शुरू से ही यह सवाल नहीं है कि यहां इतिहास का भगवान कौन है।

अब श्लोक 2 को देखें। और यह लोगों के साथ वैसा ही होगा, पुजारी के साथ, दासों के साथ, उसके स्वामी के साथ, नौकरानियों के साथ, उनकी मालकिन के साथ, आदि, आदि। इसका क्या मतलब है ? कोई भी सामाजिक-राजनीतिक वर्ग बचने वाला नहीं है। ऊपर से नीचे तक, अंदर से बाहर तक, हर कोई इसमें शामिल है।

और वह बात बार-बार उठती है। अब श्लोक 4 से 6 तक देखें। पृथ्वी शोक मनाती है और सूख जाती है, संसार निस्तेज हो जाता है और सूख जाता है, पृथ्वी के सर्वोच्च लोग नष्ट हो जाते हैं, पृथ्वी अपने निवासियों के अधीन अपवित्र हो जाती है, क्योंकि उन्होंने नियमों का उल्लंघन किया है, विधियों का उल्लंघन किया है, चिरस्थायी को तोड़ा है वाचा, इस कारण शाप ने पृथ्वी को निगल लिया है, और उसके रहनेवाले अपने अधर्म के कारण दुख भोग रहे हैं, इस कारण पृथ्वी के निवासी जल गए हैं, और थोड़े ही मनुष्य बचे हैं। यहां कौन सा प्रमुख संबंध काम कर रहा है? कोई कहता है कारण और प्रभाव।

यह सही है, कारण और प्रभाव, हाँ। कारण और प्रभाव। जब आप 'के लिए' या 'क्योंकि' या 'क्योंकि' या 'इसलिए' देखते हैं, तो आप कारण और प्रभाव की तलाश में होते हैं।

यदि कारण पहले और कार्य दूसरे स्थान पर आता है, तो आप इसे कारण-कारण कहते हैं। यदि कारण दूसरे और कार्य पहले आये तो इसे पुष्टि कहते हैं। आइए मैं वर्णन करने का प्रयास करता हूँ।

तुम बन्धुवाई में जाओगे क्योंकि तुमने पाप किया है। कौन सा कार्य है और कौन सा कारण है? पाप कारण है; निर्वासन का प्रभाव है। आप पहले प्रभाव बताते हैं और बाद में कारण, यही पुष्टि है।

क्योंकि तुमने पाप किया है, तुम निर्वासन में जाओगे। कारण और प्रभाव। फिर से, अपने बाइबल अध्ययन में, उस प्रकार की चीज़ की तलाश करें।

क्योंकि यह संपूर्ण बाइबल में है। बाइबल कारण और प्रभाव से गहराई से जुड़ी हुई है। क्योंकि भगवान उसमें शामिल है।

आप ऐसा करें, परिणाम ये है। वे पूर्वानुमेय व्यवहार से पूर्वानुमेय परिणाम हैं। और जब हम यह भूल जाते हैं, तो हम बड़ी मुसीबत में पड़ जाते हैं।

तो, ठीक है, यहाँ क्या प्रभाव है? विनाश, न्याय, पृथ्वी शोक मनाती है और सूख जाती है। संसार नष्ट हो जाता है और मुरझा जाता है। पृथ्वी के सर्वोच्च लोग निस्तेज हो जाते हैं।

पृथ्वी अपने निवासियों के अधीन अशुद्ध पड़ी है। अब, अगला शब्द क्या है? क्योंकि उन्होंने व्यवस्था का उल्लंघन किया है, विधियों का उल्लंघन किया है, और सनातन वाचा को तोड़ दिया है। तो, श्लोक 4 और 5ए प्रभाव है।

और मैं विशेष रूप से चाहता हूँ कि आप 5ए पर ध्यान दें। दुनिया अव्यवस्थित क्यों है? संसार अपवित्र है, क्या? अपने लोगों द्वारा, अपने लोगों के अधीन। बाइबल हमें बताती है कि प्रकृति हमारे कारण अभिशाप में है।

सवाल? ठीक है, आप मुझसे आगे हैं। हम वहाँ पहुँचेंगे। तो, यह प्रभाव है।

पृथ्वी सूख गई है, पृथ्वी निस्तेज हो गई है, पृथ्वी शोक मना रही है। अब, कारण क्या है? उन्होंने कानूनों का उल्लंघन किया है। अतिक्रमण का क्या मतलब है? तोड़ने के लिए? अवज्ञा की? क्या कोई लैटिन जानता है? अतिक्रमण।

पार जाना, पार जाना। भगवान कहते हैं, यहाँ बाड़ है। और मैं कहता हूँ, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अब मुझे पता है कि क्या कूदना है। अपराध को पार करना है। हद है।

तो, नंबर एक, हमने उल्लंघन किया है। अब, याद रखें, कानून के लिए हिब्रू शब्द क्या है? टोरा। टोरा।

और टोरा का क्या मतलब है? अनुदेश। अच्छा, निर्देश। हम कानून शब्द सुनते हैं और सोचते हैं, हाँ, ठीक है।

कुछ मतलबी मजिस्ट्रेट कहते हैं, हम्म, ये लोग बहुत मजे कर रहे हैं। मुझे उन्हें रोके रखने के लिए यहां कुछ प्रतिबंध लगाने की जरूरत है। नहीं।

भगवान ने प्रतिबंध नहीं बनाये। भगवान ने दुनिया को एक निश्चित तरीके से संचालित करने के लिए डिज़ाइन किया है। और यहाँ निर्देश पुस्तिका है।

और हमने कहा है नहीं। नहीं, मैं इस मशीन, इस दुनिया का उपयोग नहीं करने जा रहा हूँ, जिस तरह से इसे उपयोग करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

मुझे ज़्यादा अच्छी तरह पता है। मेरे दोस्त, साँप. मुझसे कहता है कि तुम्हें सचमुच मेरी परवाह नहीं है।

कि तुमने अपनी सुरक्षा के लिए ये सब किया। कानूनों का उल्लंघन किया. क़ानून का उल्लंघन किया.

उन्हें फाड़ डाला. उनके साथ वो किया जो नहीं करना चाहिए था. और चिरस्थायी वाचा को तोड़ दिया.

अब, टिप्पणीकार इस बारे में बहस करते हैं। यही संसार है. वाचा हिब्रू लोगों के साथ थी, है ना? मुझे लगता है कि टोरा से शुरू करने से, निर्देशों के साथ, यह स्पष्ट है कि यशायाह कह रहा है, निर्माता और प्राणियों के बीच एक अनकही वाचा है।

एक अनकहा समझौता है. तुम्हें इसी तरह जीने के लिए बनाया गया है। तुम्हें व्यभिचार करने के लिए नहीं बनाया गया है।

तुम चोरी करने के लिए नहीं बने हो. आप झूठ बोलने के लिए नहीं बने हैं. आप एक दूसरे की जान लेने के लिए नहीं बने हैं।

वहाँ एक संविदात्मक समझौता है, जिसमें एक अर्थ में, जन्म लेकर हम प्रवेश करते हैं। और हम कहते हैं, नहीं. नहीं।

इसलिए, एक अभिशाप पृथ्वी को निगल जाता है। अब, आप देखिए, हम वापस आ गए हैं। हमने प्रभाव के साथ शुरुआत की।

4 और 5ए. फिर हम 5बी और सी में कारण के लिए गए। और अब, श्लोक 6 में, हम प्रभाव पर वापस आ गए हैं। इसलिए, एक अभिशाप पृथ्वी को निगल जाता है, और इसके निवासी अपने अपराध के लिए पीड़ित होते हैं।

इस कारण पृथ्वी के निवासी झुलस गए, और थोड़े ही मनुष्य बचे हैं। तो, इस संबंध को मैं पुष्टि कहता हूँ। पुष्टि.

यहाँ पर बहुत सारी चीज़ें इत्यादि हैं। और यह कारण है. प्रभाव पहले, कारण दूसरा।

पुष्टि. कारण पहले, प्रभाव बाद में. कारण.

ठीक है। तो, मैं सवाल पूछूंगा कि क्या यह हम पर लागू होता है? मेल कहते हैं, बिल्कुल नहीं। ओह, यह एक अच्छी राहत है।

यह हम पर कैसे लागू होता है? यह हमारी तस्वीर है, हाँ? इंसानों का. और क्या? यह हम पर कैसे लागू होता है? तुम्हें, मुझे? बेहतर होगा कि हम वापस जाएं और निर्देशों को देखें। यह बिल्कुल सही है.

यह बिल्कुल सही है. उन नास्तिकों पर उंगली उठाना बहुत आसान है जो दुनिया को गड़बड़ा रहे हैं। जैसा कि उस आदमी ने कहा, हर बार जब आप एक उंगली उधर उठाते हैं, तो आपकी तीन उंगलियां वापस इस दिशा में इशारा करती हैं।

मेरे बारे में कैसे? आप कैसे हैं? क्या मैं निर्देशों के अनुसार जी रहा हूँ? नहीं, नहीं, अरे यार, मुझे इसे सही करना होगा वरना वह मुझे पकड़ लेगा। लेकिन भगवान, आपने जीवन कैसे बनाया? जीवन के वे कौन से मापदंड हैं जिनके भीतर भगवान कहते हैं, आनंद लो, आनंद लो ? जब आप इसे देखते हैं, तो वास्तव में जीवन पर उल्लेखनीय रूप से कुछ प्रतिबंध होते हैं।

यह दिलचस्प है कि दस आज्ञाएँ नकारात्मक रूप से बताई गई हैं। चोरी मत करो. यह कहता है कि आपकी संपत्ति अक्षुण्ण है।

मुझे आपकी संपत्ति लेने का अधिकार नहीं है। लेकिन यह नहीं कहता, ठीक है, आप इस पर कब्ज़ा नहीं कर सकते और आप उस पर कब्ज़ा नहीं कर सकते और आप ऐसा नहीं कर सकते... नहीं। उसके मापदंडों के भीतर, जीवन में अपार स्वतंत्रताएँ हैं।

लेकिन पैरामीटर कहां हैं? ठीक है। मैं देख रहा हूँ कि भाई हेंडरशॉट ने घड़ी को पांच मिनट तेज कर दिया है। वह मेरे बारे में थोड़ा चिंतित है.

तो, मैं इसके लिए उसे दोषी ठहराऊंगा। यह उसकी गलती नहीं है. ठीक है, श्लोक 7 से 13 में, एक विरोधाभास है।

विरोधाभास क्या है? देश के लोग, सुख और दुःख। और आनंद कहां से आता है? शराब, हाँ. हाँ।

शराबीपन. विस्मृति. यह समझना आसान है कि आर्कटिक सर्कल के उत्तर में रहने वाले लोग शराबी क्यों हैं।

आप यह भूलना चाहते हैं कि दिन में 23 घंटे अंधकार के होते हैं। हाँ, लेकिन आप इसे वहाँ बड़ा नहीं कर सकते। आपको इसे कहीं और से आयात करना होगा, हाँ।

इसलिए हां। श्लोक 9, अब वे गाते हुए दाखमधु नहीं पीते। तेज़ पेय पीने वालों के लिए कड़वा होता है।

हाँ। तो, एक झूठी तरह की खुशी। एक आनंद जो विस्मृति में उत्पन्न होता है।

लेकिन उस खुशी की जगह दुख है। क्योंकि, श्लोक 10 में, बर्बाद शहर टूट गया है। हर घर को बंद कर दिया गया है ताकि कोई भी प्रवेश न कर सके।

शराब की कमी को लेकर सड़कों पर हाहाकार मचा हुआ है। सारा आनंद धूमिल हो गया है। शहर में वीरानी छाई हुई है।

अब, हमें यहां दो विषयों से परिचित कराया जा रहा है जो इन चार अध्यायों के माध्यम से चलेंगे। एक है शहर। और दूसरा है गीत या गायकी।

और यहाँ बाइबल में एक और प्रमुख संबंध आता है। और वह विरोधाभास है। एक संबंध कारण-और-प्रभाव संबंध है।

दूसरा है कंट्रास्ट। क्योंकि हम दो तरह के शहर और दो तरह की गायकी देखने जा रहे हैं। तो, शराबियों का गाना है।

और यह दुःख से शांत हो जाएगा। और हम इस शहर को देखते हैं। यह बर्बाद शहर।

ये वीरान शहर। इसके द्वार खंडहर हो गये। तो, वह एक छवि में कहता है जो यशायाह को पसंद है, पद 13।

इस प्रकार पृथ्वी के बीच में जाति जाति के लोगों के बीच ऐसा होगा जैसे जैतून के पेड़ को तोड़ा जाता है, जैसे अंगूर की कटाई के समय बीनने के समय। वह किस बारे में बात कर रहा है, और यहां यह बहुत है, जिस शब्द का उपयोग किया गया है वह अण्डाकार है, जहां आप सामान छोड़ देते हैं। अन्य स्थानों पर वह इसे और अधिक पूर्णता से भरता है।

यह विचार है कि जब आप सभी जैतून तोड़ लेंगे, उस सबसे ऊंची शाखा पर, अंत में, जहां तक आप नहीं पहुंच सकते हैं, तो कुछ जैतून बचे रहेंगे। और जब आप अंगूर के बगीचे में घूमेंगे और सभी अच्छे अंगूर प्राप्त कर लेंगे, तो वहाँ कुछ छोटे हरे मुरझाए हुए अंगूर होंगे जिन्हें आप पीछे छोड़ गए होंगे। और यशायाह कहता है कि न्याय इसी प्रकार होगा।

बाग को साफ-सुथरा चुना जाएगा और यहां-वहां केवल कुछ टुकड़े ही छोड़े जाएंगे। अब, 14, 15, और 16। इसके बारे में क्या? ये लोग क्यों गा रहे हैं? श्लोक 14.

वे अपनी आवाजें उठाते हैं, गाते हैं, क्या? खुशी के लिए। आनंद। बाकी लोग शराब के नशे में गाना गा रहे थे।

अब अंगूर के बगीचे खाली हो गए हैं, इसलिए वहां शराब नहीं है, इसलिए कोई खुशी नहीं है। अचानक, ऐसा लगा जैसे पर्दे पीछे खींच लिए गए हों। हम उजाड़ धरती की यह तस्वीर देखते हैं, और फिर यहाँ पर्दे वापस आ जाते हैं।

वे अपनी आवाजें ऊंची करते हैं, वे खुशी से गाते हैं, किस बात पर? प्रभु की महिमा. यह खुशी का कारण क्यों है? मैं अपनी महिमा के बारे में गाना पसंद करूंगा, है ना? प्रभु की महिमा आनंदपूर्ण गायन का कारण क्यों है? उसने शत्रु का नाश कर दिया है. ठीक है, उसने अपनी महिमा से शत्रु को नष्ट कर दिया है।

वह ऊंचा हो गया है, शत्रु नीचे गिरा दिया गया है। हाँ, वह एक है. वह आनंद आपके बाहर किसी चीज़ से आता है।

ठीक है। हम शराब पीने और फ़सल वगैरह के बारे में बात कर रहे हैं। वह कुछ ऐसा है जो वहां है, वह अस्थायी है, लेकिन फिर वह आनंद आता है जो आपके बाहर है।

वह आनंद जो स्वयं से बाहर है। लेकिन परमेश्वर की महिमा खुशी का कारण क्यों है? क्या हमें उसकी मुक्ति या उसकी दयालुता या उसकी अच्छाई नहीं कहनी चाहिए? उसकी महिमा खुशी का कारण क्यों है? ठीक है, उसकी धार्मिकता, वह ऊंचा है। उसकी उपस्थिति.

उसकी शक्ति. जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं. मोक्ष।

हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि हम महिमा के बारे में बात कर रहे हैं। महिमा एक प्रकार की सुंदर चीज़ है, जैसे कि यह शहर के उजाड़ के बीच के अंतर के मुकाबले देखने में मनभावन है। ठीक है, ठीक है।

ये सभी चीज़ें जो हम साझा कर रहे हैं वे भगवान की महिमा के निहितार्थ हैं। यह उत्थान का विचार है, है ना? यह जानकर बहुत खुशी हुई कि इस भगवान को ऊपर उठा लिया गया है। ध्यान दें, पूर्व में, प्रभु की महिमा करें।

हमने पहले उस शब्द के बारे में बात की है, हिब्रू शब्द कावोद । वजन, महत्व, वास्तविकता. इस ईश्वर, इस अच्छे ईश्वर, इस प्रेमी ईश्वर, इस धर्मी ईश्वर, इस दयालु ईश्वर का विचार ऊंचा होना अच्छी खबर है।

यदि वह क्रूर ईश्वर होता, तो उसकी महिमा खुशी का कारण नहीं होती। यदि वह एक भ्रष्ट भगवान होता, तो उसकी महिमा खुशी का कारण नहीं होती। यदि वह एक कपटी भगवान, एक झूठ बोलने वाला भगवान होता, तो उसकी महिमा खुशी का कारण नहीं होती।

परन्तु यह परमेश्वर कौन है, इस कारण उसका ऊंचा होना शुभ समाचार है। उनकी महिमा के लिए, उनकी वास्तविकता के लिए, उनके वजन को दुनिया में प्रदर्शित करने के लिए, यह अच्छी खबर है। और इसलिए, नास्तिक को, हम जवाब देते हैं, यह कोई संयोग नहीं है कि यह भगवान दुनिया के देवताओं की तरह नहीं है।

ये भगवान अलग है। और वह रहस्योद्घाटन का प्रमाण है। इस भगवान को इंसानों ने नहीं बनाया।

जैसा कि यशायाह बार-बार कहना पसंद करता है, इस भगवान ने इंसानों को बनाया। लेकिन, 16 के अंतिम भाग को देखें। वहां क्या चल रहा है? सहयोगी भी हैं... जब हम असफल होते हैं तो उसका दर्द क्या होता है, वह जानते हैं।

वह जानता है कि जब हम असफल होते हैं तो उसका दर्द क्या होता है। हाँ, मुझे लगता है कि यह बिल्कुल सही है। मुझे लगता है कि ऐसा लगता है मानो यशायाह कह रहा हो, हां, हां, मुझे पता है कि आगे खुशी है।

मैं जानता हूँ कि ईश्वर की उपस्थिति आनंद का कारण है। लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि आगे उस आनंद का अनुभव करने से पहले हमें कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी। मैंने आपसे पहले भी कई बार कहा है, कि यशायाह हमें भविष्य की आशापूर्ण प्रतिज्ञाओं के मद्देनजर वर्तमान की वास्तविकता को भूलने देने के लिए कभी तैयार नहीं है।

ऐसा लगता है मानो यशायाह कह रहा हो, मैं वास्तव में उस गीत में शामिल नहीं हो सकता। क्योंकि मैं जानता हूँ कि उस दिन से पहले क्या होने वाला है जब वह गाना पूरी तरह से साकार हो जाएगा। मैं दर्द जानता हूँ, मैं दुख जानता हूँ, मैं उस विश्वासघात को जानता हूँ जो रास्ते में होने वाला है।

और इसलिए हम श्लोक 17 और उसके बाद वापस आते हैं। आप 17 से 23 तक भाषा का वर्णन कैसे करेंगे? यह किस प्रकार की भाषा है? यह सर्वनाशी है। ठीक है, अच्छा।

आप और क्या कहेंगे? भविष्यवाणी। यह एक तरह से अतिशयोक्तिपूर्ण है, है ना? यदि आप चाहें तो यह अत्यधिक है। गड्ढे और फंदे में आतंक।

जो भय के शब्द से गिरेगा, वा भय के शब्द से भागेगा, वह गड़हे में गिरेगा। जो गड़हे से निकलेगा वह फंदे में फँसेगा। स्वर्ग के खिड़कियाँ खुल गईं, और पृथ्वी की नेवें कांप उठीं।

यहाँ किस स्तर के निर्णय का चित्रण किया जा रहा है? संपूर्ण विश्व का, वास्तव में ब्रह्मांड का विनाश। पद 21, उस दिन यहोवा स्वर्ग की सेना को, अर्थात् पृथ्वी के राजाओं को, पृथ्वी पर ही दण्ड देगा। मेरी, धरती डगमगा जाती है, धरती हिल जाती है।

श्लोक 20, पृथ्वी क्यों हिलेगी? विद्रोह। हाँ, शब्द क्या है? अतिक्रमण। इसका उल्लंघन इस पर भारी है।

हां, हां। मुझे बाड़ दिखाओ ताकि मैं उस पर जा सकूँ। मुझे दिखाओ कि मुझे क्या नहीं करना चाहिए ताकि मैं वह कर सकूँ।

और फिर, आपमें से जिनके भी बच्चे हैं वे इस बात को बहुत अच्छी तरह से समझते हैं। मैं यह तब तक नहीं करना चाहता था जब तक कोई यह न कहे कि तुम यह नहीं कर सकते। तब तक ऐसा नहीं करना चाहता था जब तक कोई न कहे कि ऐसा मत करो।

और अचानक यह दुनिया की सबसे आनंददायक चीज़ बन गई। वह मूल पाप कहलाता है। और यह वहां है।

हां। क्या यह वह उपमा है जिसकी तुलना में मैं अशुद्ध होठों वाले लोगों के बीच रहता हूँ? हां, हां।

मेरा संस्करण अपराध नहीं कहता, अपराध कहता है। यह अपराध का परिणाम है। अपराध का दोष।

हां, हां। तो, यह तस्वीर है। श्लोक 23, चन्द्रमा भ्रमित होगा, सूर्य लज्जित होगा।

क्यों? क्योंकि स्वर्ग की सेनाओं का यहोवा सिथ्योन पर्वत पर और यरूशलेम में राज्य करता है। और उसकी महिमा उसके पुरनियों के साम्हने होगी। पिछले दो हफ्तों से मैं कॉनकॉर्डिया सेमिनरी में कुछ स्नातक छात्रों को यशायाह के पहले 39 अध्यायों के माध्यम से ईश्वर के दर्शन के बारे में बता रहा हूँ।

मैंने उनसे जो काम करवाया उनमें से एक था लॉर्ड ऑफ होस्ट्स की सभी घटनाओं को देखना। स्वर्ग की सेनाओं के प्रभु. और यह ईश्वर की सार्वभौमिक शक्ति की बात कर रहा है।

नष्ट करने की उसकी शक्ति और उद्धार करने की उसकी शक्ति। स्वर्ग के सभी यजमान। और मैं यहां पृष्ठभूमि में टिप्पणी करता हूँ, मुझे लगता है, हां।

बुतपरस्तों के लिए स्वर्ग का यजमान तारे हैं और वे सभी देवता हैं। और यशायाह कहता है, उह-उह। वे यहोवा की सेना का हिस्सा हैं।

और यहोवा उनको नाम लेकर बुलाता है। उनमें से हर एक का मालिक है। और तुम बुतपरस्तों ने एक मेज़बान बनाया है।

और परमेश्वर उस मेज़बान को नष्ट कर देगा। जिसे आपने बनाया है। अपनी शक्ति में।

ठीक है, अब हम कहां बंद करें? अंतिम श्लोक यहाँ. 23. सेनाओं का यहोवा क्या? क्रिया क्या है? राज करता है।

कहाँ? सिथ्योन पर्वत पर और यरूशलेम में। और उसकी महिमा कौन देखेगा? बड़ों। रहस्योद्घाटन की किताब याद है? 24 बुजुर्ग।

दोहरा 12. परमेश्वर की महिमा कौन देखेगा। वह राजा है।

कोई अन्य नहीं। और वह सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में राज्य करेगा. अब स्मरण रखो, यहाँ सिय्योन है।

सिय्योन आज पूरी दुनिया में पाया जाता है। यहीं उसका राजा बनने का मतलब है। यहीं उसका तात्पर्य धार्मिकता से शासन करने से है।

कोई कहता है, क्या आपको विश्वास नहीं है कि अंतिम दिन यरूशलेम में भगवान का शारीरिक रूप से राज्याभिषेक किया जाएगा? खैर, अगर ऐसा होता है, तो मैं अपना टिकट वापस नहीं करूंगा। नहीं, लेकिन यह अंततः इसके बारे में नहीं है, क्योंकि नया नियम हमें बहुत स्पष्ट करता है।

यह आखिरकार किसी ऐसी चीज़ के बारे में नहीं है जो भौतिक रूप से कहीं घटित होने वाली है। यह कुछ ऐसा है जिसे ईश्वर ने, यीशु मसीह के माध्यम से, अब संभव बना दिया है। और यह अच्छी खबर है.

वो अच्छी खबर है। ठीक है। अध्याय 25.

हे भगवान, तुम मेरे भगवान हो. मैं तुम्हें ऊँचा उठाऊँगा। मैं तेरे नाम की स्तुति करूँगा।

क्योंकि तू ने अद्भुत काम किए हैं। योजनाएँ पुरानी, विश्वसनीय और पक्की बनीं। क्या किसी को याद है कि अब से पहले हमने ईश्वर की योजनाओं के इस विचार का सामना कहाँ किया था? यशायाह में.

अध्याय 14. श्लोक 24. सेनाओं के यहोवा, स्वर्ग की सेनाओं के यहोवा ने शपथ खाई है, जैसा मैं ने कल्पना की है, वैसा ही होगा।

जैसा मैंने इरादा किया है, वैसा ही यह खड़ा होगा। कि मैं अश्वर को अपने देश में तोड़ डालूँगा, और अपने पहाड़ों पर उसे पांवों से रौंद डालूँगा। बिलकुल वैसा ही हुआ.

जैसा कि हम अध्याय 37. श्लोक 26 में पढ़ेंगे। यही वह उद्देश्य है जो संपूर्ण विश्व के संबंध में निर्धारित किया गया है।

यह वह हाथ है जो सभी राष्ट्रों पर फैला हुआ है। क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है, और उसे कौन रद्द करेगा? हाँ। भगवान की योजना है.

वह इतिहास के मंच पर सर्वप्रमुख अभिनेता हैं। उनकी योजनाएं साकार होने वाली हैं। आपको और मुझे उन योजनाओं को साकार करने के तरीके को बदलने की स्वतंत्रता है।

लेकिन हमें उन योजनाओं के अंतिम परिणाम को रद्द करने की स्वतंत्रता नहीं है। ईश्वर असीम रूप से रचनात्मक है। और वह अपने उद्देश्यों को पूरा करने जा रहा है.

हालाँकि, जैसा कि मैं कहता हूँ, हमें उन तरीकों को बदलने की स्वतंत्रता है जिनसे वास्तव में उन उद्देश्यों को पूरा किया जा सकता है। तो उसने क्या किया है? श्लोक 2. उसने बनाया है... क्या? शहर एक ढेर. किलाबंद शहर खंडहर हो गया।

परदेशियों का महल अब शहर नहीं रहा। इसका पुनर्निर्माण कभी नहीं किया जाएगा. इसलिये... इसलिये एक प्रभाव का परिचय देता है.

यहाँ क्या कारण है? तू ने नगर को ढेर बना दिया है। इसलिये बलवान लोग तुम्हारी महिमा करेंगे। क्रूर राष्ट्रों के नगर तुमसे डरेंगे।

परमेश्वर के न्याय के हाथ से अन्य राष्ट्र उसे पहचानेंगे और उससे डरेंगे। क्योंकि... तो यहां हम फिर से आगे-पीछे जाते हैं। कारण प्रभाव।

प्रभाव, कारण. क्योंकि तू कंगालोंके लिथे गढ़, और संकट में दरिद्रोंके लिथे दृढ़ हुआ है। दो कारण.

एक, आपने उन शत्रु शक्तियों को, उस मजबूत किलाबंद शहर को नष्ट कर दिया। और आपने गरीबों की खातिर ऐसा किया। और इसलिए, शक्तिशाली राष्ट्र आपकी प्रशंसा करेंगे।

खैर, ऐसा हुआ है. हो चुका है। 0 ईस्वी में किसने भविष्यवाणी की होगी कि राष्ट्र यहूदा के परमेश्वर की पूजा करने के लिए यरूशलेम आएंगे।

लेकिन हमारे पास है। हमारे पास है। अब श्लोक 6. इस पर्वत पर, वह पर्वत जहाँ यहोवा राजा के रूप में राज्य कर रहा है।

वह किसके लिए बनाएगा? सभी लोग। ज़रा ठहरिये। मुझे लगा कि ईश्वर ने केवल यहूदियों को चुना है।

अच्छा, एक मिनट रुकिए. मुझे लगा कि उसने अभी-अभी पूरी दुनिया को नष्ट कर दिया है। इसे अतिशयोक्ति कहते हैं.

आप इसकी वर्तनी के तरीके को देखते हैं और आप यह कहने के लिए प्रलोभित हो जाते हैं कि यह अतिशयोक्ति है। लेकिन यह अतिशयोक्ति नहीं है. अतिशयोक्ति।

अपनी बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताने की कोशिश करना। यीशु हर समय इसके लिए दोषी था। जब तक तुम अपने पिता और माता से घृणा न करो, तुम मेरी सेवा नहीं कर सकते।

वाह! यह वह व्यक्ति है जिसने अभी-अभी फरीसियों पर आरोप लगाया है। बहाने ढूँढने का ताकि उन्हें अपने माता-पिता की देखभाल न करनी पड़े।

अब वह उससे कहीं आगे निकल गया है। वह कहते हैं, नहीं, ऐसा नहीं है कि आप उनका ख्याल मत रखिए। यह उनसे नफरत है।

लेकिन वह एक मुद्दा बनाने की कोशिश कर रहा है। मुझे हराने की आपकी प्रतिबद्धता इतनी कट्टरपंथी हो कि तुलनात्मक रूप से, आपके माता-पिता के प्रति आपकी आवश्यक प्रतिबद्धता नफरत की तरह दिखे। तो, यहाँ भी वैसा ही है।

संसार का कोई भी भाग परमेश्वर के न्याय से बचने वाला नहीं है। इसका प्रत्येक भाग इसके अधीन है। लेकिन यह क्या कहता है? छह, सात और आठ.

उसका उद्धार कितना व्यापक है? सभी राष्ट्र, सभी लोग, सभी चेहरे, सारी पृथ्वी। हां, हां। यदि न्याय पूरे विश्व को छूता है, तो मोक्ष भी छूता है।

और वह जो मोक्ष प्रदान कर रहा है उसकी प्रकृति क्या है? वह यहाँ इस पर्वत पर वास्तव में क्या करने जा रहा है? वह क्या हटाने जा रहा है? मौत। मौत। मौत।

वह इस पर्वत पर उस आवरण को निगल जाएगा जो सब देशों के लोगों पर छाया हुआ है। वह पर्दा जो सभी राष्ट्रों पर फैला हुआ है। वह मृत्यु को सदैव के लिये निगल जाएगा।

और प्रभु यहोवा परमेश्वर सभी के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा। बहुत खूब। बहुत खूब।

वह यही वादा करता है। यदि न्याय पूरे विश्व को छूता है, तो मोक्ष पूरे विश्व को छूता है। और यह सब इस छोटे से देश के भगवान से आता है जो जेसुइट काउंटी से बड़ा नहीं है।

इसे कहते हैं विश्वास, दोस्तों. श्लोक नौ को देखो. उस दिन यह कहा जाएगा, देखो, यह हमारा परमेश्वर है।

हमारे पास क्या है? मैं विश्वास सुनता हूँ. क्या किसी और के पास कोई अलग शब्द है? भारित। हाँ।

अगले सप्ताह का अध्ययन बनाते समय मैं भूल गया कि हम इसे यहाँ कवर कर रहे थे। तो आप इसे वहाँ पृष्ठभूमि में पाएंगे। एक शब्द है, एक हिब्रू शब्द, बाज़ा, जिसका अनुवाद विश्वास है।

दो अन्य शब्द हैं, कावा और हाका। वह कठोर एच. हाका है। ये दोनों अनुवादित भार हैं।

लेकिन अक्सर, जैसा कि मैंने यहां सुना, उनका अनुवाद विश्वास के रूप में भी किया जाता है। क्योंकि यह अंग्रेजी वजन की तरह नहीं है. तुम्हें पता है, ठीक है, बस वहीं बैठो और उसके आने तक प्रतीक्षा करो।

यह आत्मविश्वासपूर्ण प्रत्याशा का विचार है। हम इसे थोड़ा सा पकड़ लेते हैं जब हम कहते हैं, ओह, मैं इंतजार नहीं कर सकता। यह शब्द जानता है कि प्रतीक्षा का संतोषजनक निष्कर्ष होगा।

यह शब्द प्रत्याशा, आत्मविश्वास भरी उम्मीद का शब्द है, साथ ही ईश्वर के आगे चलने और अपनी समस्याओं को अपने तरीके से हल करने से इनकार भी है। यशायाह ने इसे अध्याय 40, श्लोक 33 में दर्ज किया है। वे जो प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं।

अब, ऐसा नहीं है, ठीक है, मुझे लगता है कि वह देर-सबेर आएगा। ठीक है, ठीक है, और कुछ नहीं करना है। लेकिन यह विशेष रूप से यह बाद वाला बिंदु है।

मैं भगवान के आगे नहीं भागने वाला और इसे अपने तरीके से करने वाला नहीं हूँ। मैं उसके अपने ढंग से करने का इंतजार करूँगा। सवाल? यदि आपने इसे मॉडलिंग करते हुए देखा है, तो यह वास्तव में अद्भुत है।

मेरे पिता को एक बार बहुत बुरी बीमारी हो गई थी। परिवार यह मानकर इकट्ठा हो गया कि वह मरने वाला है। और अस्पताल के प्रतीक्षा कक्ष के ठीक बीच में, मेरी माँ चेहरे पर मुस्कान के साथ बैठी थी।

उसने कहा, क्या तुम ठीक हो? और उसने कहा, मैं प्रभु की बाट जोह रही हूँ। और उसका यही मतलब था. यह ठीक से काम कर गया।

हाँ। विपरीत अर्थ में, यह कैसा होगा जब शाऊल ने इंतजार नहीं किया और आगे बढ़कर बलिदान दिया? हाँ, यह बिल्कुल सही है। यह इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि मुझे यह समस्या है।

पलिश्टी वहाँ ऊपर हैं। हम सैमुअल के आने का एक सप्ताह से इंतजार कर रहे हैं। सैनिक दूर जा रहे हैं।

वे उस पहाड़ी पर हमला नहीं करना चाहते. मैं अब और इंतजार नहीं कर सकता. हाँ? यह बात पॉल पर लागू होती है जब वह रोम में भविष्य के गौरव के बारे में बात करता है।

उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करें. हां हां। यह बिल्कुल सही है.

उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करें. नये नियम में इसकी आशा इसके करीब आती है। फिर, ऐसा नहीं है, ठीक है, मुझे आशा है कि वह आएगा।

नहीं, हम आशा, आश्वासन, निश्चितता में जी रहे हैं। हाँ। यह सही है।

यह सही है। मैं जानता हूँ, जैसा कि भाई जॉन कह रहे थे, मुझे पता है कि वह इससे निपटेंगे। मैं जानता हूँ कि वह अपने समय और अपने तरीके से मुझे सही समाधान देंगे।

और उस तरह की प्रत्याशा में जी रहे हैं, उस तरह की आशा में जी रहे हैं। हां हां। तो धैर्य का एक उपाय है.

बिल्कुल। बिल्कुल। और यह है।

यही इनकार है। मेरे समय में नहीं, मेरे संसाधनों में नहीं, मेरी बुद्धि के अनुसार नहीं। लेकिन अपने समय में, अपने संसाधनों में, अपनी बुद्धि में।

अब, वह आपके संसाधनों, आपकी बुद्धि और उन सभी प्रकार की चीजों का बहुत अच्छी तरह से उपयोग कर सकता है। लेकिन यह वही कर रहा है और आप इसे जानते हैं क्योंकि आपने इंतजार किया। और यदि तुम उसके आगे भागोगे, तो तुम्हें कभी पता नहीं चलेगा।

वह निश्चितता के साथ प्रतीक्षा करें। हाँ, हाँ, बिल्कुल। वह निश्चित निश्चितता।

और इसीलिए यह हो सकता है, उनका अनुवाद विश्वास किया जा सकता है। लेकिन कभी-कभी विश्वास इस समय तत्व से चूक जाता है जो यहां शामिल है। सारा और एलिजाबेथ की तरह।

हां। इंतज़ार में। इंतज़ार कर रहा हूँ, हाँ, हाँ।

हाँ, बंजर होते हुए भी इसे सुरक्षित रखना। धधकती भट्टी, हाँ। हाँ।

मुझे नहीं लगता कि ऐसा करना आसान होगा। हँसी। नहीं।

किसी ने नहीं कहा कि ऐसा होगा। ऐसा लगता है कि ऐसा ही होगा, यह कहता है कि यहां प्रतीक्षा की जा रही है, लेकिन इसमें विश्वास होना चाहिए। इस पर भरोसा होना चाहिए।

जैसे नए नियम में भी जब यीशु ने शिष्यों को छोड़ा, तो उसने कहा कि वह वापस आ रहा है। लेकिन कुछ देर तक वे वहीं बैठे रहे, मुझे लगता है, इंतज़ार करते रहे। हाँ सही।

तो यह यहाँ वही बात नहीं है, लेकिन एक तरह से यह वास्तव में है। हां यह है। इंतज़ार करते हुए भी आप वही करना चाहते हैं जो ईश्वर चाहता है कि आप उस समय में करें।

हाँ, और आप देखते हैं कि यह ठीक आहाज तक जाता है। यशायाह कहता है, अरे, हाँ, मुझे पता है। इज़राइल और सीरिया आ रहे हैं और वे आपको सिंहासन से हटाकर किसी और को सिंहासन पर बिठाने की योजना बना रहे हैं।

लेकिन हे, यह भगवान के हाथ में है और आप बस प्रतीक्षा करें। और आहाज कहता है मैं इंतज़ार नहीं कर सकता। मुझे ये करना है।

और अब भी वही बात है। हम उस समय के करीब आ रहे हैं जब आहाज के पुत्र हिजकिय्याह का सामना कुछ लाख अशूरियों से होने वाला है। अच्छा, क्या आप इंतज़ार करेंगे? हां मेरा अनुमान है कि।

मुझे आशा है कि मैं दोहरा नहीं रहा हूँ, लेकिन यह प्रतीक्षा मुझे उस हर चीज़ के लिए तैयार कर सकती है जिसे ईश्वर पारित करने जा रहा है। हां, प्रतीक्षा मुझे, हमें, ईश्वर जो कुछ भी करने जा रहा है उसके लिए तैयार कर सकती है। हां हां।

फिर, यदि हम जल्दबाजी करते हैं, तो जो होने वाला है उसके लिए हम तैयार नहीं होंगे। ऐसा कुछ हो सकता है जिसे ईश्वर को कार्य करने में सक्षम बनाने के लिए हमारे भीतर घटित होने की आवश्यकता है। बिल्कुल, बिल्कुल।

तो, वे इसे देखने जा रहे हैं। यह हमारे भगवान हैं। हम उसकी बाट जोहते रहे, कि वह हमें बचाए।

यह यही है। हमने उसका इंतजार किया है। आइए हम उसके उद्धार पर प्रसन्न और आनंदित हों।

क्योंकि यहोवा का हाथ इस पर्वत पर रहेगा, और मोआब अपने स्थान में रौंदा जाएगा। बहुत से टिप्पणीकार श्लोक 10, 11 और 12 से बहुत परेशान हैं। क्योंकि श्लोक 1 से 9 बहुत अच्छे हैं।

श्लोक 10, 11, और 12 कुछ भी हों लेकिन अच्छे हैं। भयंकर। यह एक खलिहान की तस्वीर है।

यदि आप कभी फरवरी में किसी खलिहान में गए हों, तो आप जानते होंगे कि यह कोई अच्छी जगह नहीं है। और मोआब का मुंह नीचे की ओर है। अपने हाथ ऐसे फैलाये मानो तैर रहे हों।

और वह नहीं कर सकता। प्रभु के लिए, श्लोक 11, क्या करेगा? उनका घमंड कम करो। हमने इसे अध्याय 15 और 16 में देखा।

मोआब अपने गौरव के लिए विख्यात है। फिर से, आपको जून में आने वाली अंतिम परीक्षा के लिए तैयार होने की जरूरत है। पुस्तक का विषय।

केवल ईश्वर ही महान है। और कोई भी प्राणी जो उसके विरुद्ध स्वयं को ऊँचा उठाने का प्रयास करता है वह असफलता के लिए अभिशप्त है। इसलिए नहीं कि अहंकारी परमेश्वर कहता है, मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगा।

मैं यहाँ अकेला बड़ा व्यक्ति हूँ। नीचे उतरो। नहीं।

यह बस वास्तविकता की प्रकृति का हिस्सा है। आप और मैं प्राणी हैं, सृष्टिकर्ता नहीं। और किसी भी समय हम ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि हम निर्माता के बराबर हैं, यह एक पेपर क्लिप को खोलने और उसे आउटलेट में चिपकाने जैसा है।

आप ऐसा करने के लिए नहीं बने हैं। और यह एक अद्भुत अनुभव होने वाला है। इसलिए नहीं कि बिजली आपसे नफरत करती है।

भौतिकी का नियम। यह उसी प्रकार है। सृष्टिकर्ता और जीव का नियम।

स्वयं को ऊँचा उठाकर स्वयं को उसके समान बनाने का प्रयास करें। और परिणाम हमेशा विनाशकारी होगा. मैं हिटलर से बेहतर इसका कोई उदाहरण नहीं सोच सकता।

या स्टालिन. या हिरोहितो. यहोवा अपने हाथ की कुशलता से उसका घमण्ड तोड़ देगा।

और वह उसकी ऊंची-ऊंची दीवारों को गिरा देगा, गिरा देगा, और भूमि पर धूल में मिला देगा। अब मुझे यहां अंतिम बात कहने दीजिए और मैं आपको जाने दूंगा। अध्याय 25 क्या कह रहा है कि ईश्वर सभी को अपना जीवन प्रदान करता है।

लेकिन उस जीवन को प्राप्त करना सशर्त है। अब मैं आपसे पूछता हूं कि इस अध्याय के अनुसार शर्त क्या है? विश्वास और आत्म-त्याग. मोआब कहता है कि मुझे परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है।

मैं खुद की देखभाल कर सकता हूं। और यह बहुत सारे मनुष्यों के लिए एक कठिन बिंदु है। नहीं - नहीं।

मैं भगवान से उपस्थिति चाहता हूँ. लेकिन इसे पाने के अपने अधिकार से इनकार करना? यह बहुत ऊंची कीमत है. यह बहुत ऊंची कीमत है.

अतः इस अध्याय में ये दोनों भाग विरोधाभासी नहीं हैं। मोआब का भाग्य ईश्वर की कृपा का खंडन नहीं करता है। उसकी कृपा वास्तविक है, लेकिन उसका न्याय भी वास्तविक है।

ठीक है, हम वहीं रुकेंगे। आइए अध्याय 24 और 25 को देखें।